राष्ट्रसंघ की सदस्यता

मौलिक सदस्य

राष्ट्रसंघ के सदस्यों को दो वर्गों में विभाजित किया गया था। प्रथम वर्ग में मौलिक सदस्य थे और द्वितीय वर्ग में प्रविष्ट सदस्य थे। धारा एक में मौलिक सदस्य उन राष्ट्रों को कहा गया था जिन्होंने युद्ध में मित्र राष्ट्रों तथा उनके सहयोगियों के रूप में युद्ध किया था। इनके अन्तर्गत वे सभी स्वशासित राज्य, डोमीनियन थे जिन्होंने पेरिस शान्ति सम्मेलन में भाग लिया था और संधियों पर हस्ताक्षर किये थे। इस प्रकार के बत्तीस सदस्य थे। इन मौलिक या प्रारंभिक सदस्यों में तेरह अन्य राष्ट्रों को भी सम्मलित किया गया जो युद्ध काल में तटस्थ रहे थे। इस प्रकार मौलिक सदस्यों की संख्या 45 थी।

प्रविष्ट सदस्य

प्रविष्ट सदस्यों की सदस्यता के लिए नियम था कि सभा के दो-तिहाई सदस्यों का समर्थन प्राप्त हो। संघ की सदस्यता त्यागने के लिए शर्त थी कि इसके लिए दो वर्ष का नोटिस देना आवश्यक है परन्तु इसके साथ यह भी शर्त थी कि संघ से निकलने के पूर्व उस राष्ट्र ने अपने सभी अन्तर्राष्ट्रीय दायित्वों को पूरा कर दिया हो। 1935 ई. तक प्रविष्ट सदस्यों की संख्या 20 हो गई थी।

यह दुर्भाग्य ही था कि विश्व के सभी राष्ट्र इस संस्था के सदस्य नहीं बन पाये। प्रारम्भ से ही अमेरिका, जर्मनी और रूस इसके सदस्य नहीं थे। वास्तव में, जर्मनी के साथ अन्य पराजित राष्ट्रों—तुर्की, आस्ट्रिया और बल्गारिया को भी संघ का सदस्य नहीं बनाया गया था। यह विल्सन की चौदह सूत्रीय योजना के विरुद्ध था। अतः यह स्वाभाविक था कि 1920 ई. में राष्ट्रसंघ के निर्माण के समय पराजित राष्ट्रों की दृष्टि में यह विजयी राष्ट्रों की संस्था बन गई थी। अमेरिका इस संस्था का सदस्य कभी नहीं बना।

जर्मनी 1926 ई. में इसका सदस्य बना लेकिन 1933 ई. में उसने राष्ट्रसंघ की सदस्यता त्यागने का नोटिस दे दिया। जापान और इटली ने, जो मौलिक सदस्य थे, क्रमशः 1933 ई. और 1937 ई. में सदस्यता त्यागने के नोटिस दे दिये। रूस 1933 ई. में राष्ट्रसंघ का सदस्य बना लेकिन 1940 ई. में फिनलैण्ड पर आक्रमण करने के कारण उसे राष्ट्रसंघ से बहिष्कृत कर दिया गया। परिषद् को यह अधिकार था कि वह सर्वसम्मति निर्णय के द्वारा किसी सदस्य को राष्ट्रसंघ से बहिष्कृत कर सकती थी।

इस प्रकार राष्ट्रसंघ में विश्व के सभी राष्ट्र कभी सदस्य नहीं रहे। इसकी सदस्यता संख्या घटती गई। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् अप्रैल 1946 ई. में राष्ट्रसंघ की अन्तिम बैठक हुई थी। उस समय 34 राष्ट्र इसकी बैठक में सम्मलित हुए थे।